आधुनिक हिंदी साहित्य: विविध विमर्श-1

प्रधान संपादक

डॉ. राजेंद्र बी. कोंडा

संपादक

डॉ. विजयकुमार परुते

डॉ. प्रेमचंद चव्हाण

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक हिंदी साहित्य: विविध विमर्श - 1

प्रधान संपादक
डॉ. आर. बी. कोंडा

संपादक
डॉ. विजयकुमार परुते
डॉ. प्रेमचंद चव्हाण

संपादक मंडल के सदस्य
श्रीमती कविता ठाकुर
श्रीमती सुषमा कुलकर्णी

SMT. V. G. COLLEGE FOR WOMEN
AIWAN-E-SHAHI AREA, KALABURAGI (KARNATAKA)

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक हिंदी साहित्य: विविध विमर्श - 1

AADHUNIK HINDI SAHITYA: VIVIDH VIMARSH - 1

(Collection of Research Articles)

Chief Editor: **Dr. Rajendra Konda**

Editor: **Dr. Vijaykumar Parate**
Dr. Premchand Chavan

First Impression: **JANUARY 2023**

Copy Rights: **Editorial Board**

ISBN: 978-93-5782-792-8

No Part of this Publication may be reproduced or transmitted in ar by means, electronic or mechanical, including photocopy, record any information storage and retrieval system, without permis writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsibility for the contents of the compiled in this volume. The publishers or editors do not responsibility for the same in the manner. Errors, if any, ar unintentional and request to communicate such errors to the e publishers to avoid discrepancies in future.

Published By:
SMT. V.G. COLLEGE FOR WOMEN
Aiwan-E-Shahi Area
KALABURAGI-585102

Cover Page Designed by: **Sri Shivanand Gulagi**

Printed at:
AKSHAY PRINTERS
KALABURAGI

Scanned with OKEN Scanner

19	हिन्दी उपन्यास लेखन में स्त्री विमर्श डॉ. वैशाली सालियन	73
20	समकालीन उपन्यास और नारी विमर्श डॉ. सुमन टी रोहनकर	76
21	शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण स्त्री के विविध रूपों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रवेश के त्रिपाठी	80
22	दलित साहित्य में विद्रोह के स्वर डॉ. रमेश चव्हाण	84
23	दलित साहित्य की व्यथा एवं विद्रोह डॉ. विलास अंबादास सालुंके	87
24	आधुनिक हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श कविता एस. हिरेगौड़	90
25	विविध कालखंडों में नारी के विविध रूप डॉ. राठोड राजकुमार	96
26	दलित बनाम अम्बेडकरवाद: एक विमर्श डॉक्टर तात्याराव सूर्यवंशी	99
27	अनामिका की बेजगह कविता में नारी विमर्श डॉ. श्याम गायकवाड	101
28	दलित आदिवासी विमर्श के आलोक में नाटक चंदा बेड़नी चन्द्र पाल	104
29	हिन्दी साहित्य और नारी यातना की यात्रा डां. अनीता मोहन बेलगांवकर	107
30	आधुनिक हिंदी साहित्य और आदिवासी विमर्श: विकास एवं विस्थापन की समस्या ज्योति अजयसिंह	111
31	आधुनिक हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श कल्पना महेन्द्रकर	114
32	मीडीया लेखन डा. मंजुला एस. चौहान	118
33	आधुनिक हिन्दी साहित्य मे स्त्री विमर्श डॉ. सुधामणी एस.	121
34	आदिवासी उपन्यास 'इडला' डॉ. प्रेमचंद चव्हाण	124
35	आधुनिक हिंदी साहित्य और स्त्री– विमर्श डॉ. रत्ना चटर्जी	127
36	कथाकार सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध जीवन डॉ सविता तिवारी	129
37	हिन्दी और कन्नड़ उपन्यासों में शोषित मुस्लिम स्त्री डॉ. मेहराजबेगम सैय्यद	131
38	नगाड़े की तरह बजते शब्द – काव्य में स्त्री विमर्श डॉ. अंबुजा एन् मळखेडकर	135

Scanned with OKEN Scanner

अनामिका की बेजगह कविता में नारी विमर्श

डॉ. श्याम गायकवाड
बि आर बी वाणिज्य महाविद्यालय,
रायचूर, कर्नाटका राज्य।

अनामिका समकालीन हिंदी कविता की सशक्त हस्ताक्षर है। अब तक उनके 'अनुष्टुप',' गलत पत्ते की चिट्ठी' बीजक्षर, खूरदूरी हथेलियों,अब भी वसंत को तुम्हारी जरूरत है, दूब–धान्य,जैसे काव्य संग्रह के अतिरिक्त तीन उपन्यास तथा एक कहानी संग्रह भी है। उनको राज्य भाषा परिषद पुरस्कार,साहित्य सम्मान, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, व केदार सम्मान आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। हिंदी की स्थापित कवित्री, कहानीकार और उपन्यासकार अनामिका सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्रोफेसर है। जिनको इस साल साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला है।

उनकी कविताएं अंग्रेजी में भी अनुदित है वह अपनी कविताओं में स्त्री की पीड़ा को इतनी गहराई से व्यक्त करती है, पाठक का खून समाज की पुरुष प्रधान मानसिकता के खिलाफ खौल उठता है

अनामिका अपनी कविता में ही स्त्री की जगह ढूंढ रही है क्या सभ्यता संस्कृति लोकतंत्र संविधान व न्याय को लेकर जागरण के इस युग में दुनिया की इस आधी आबादी के लिए कहीं भी जगह है। वेद वेदांत से लेकर अध्ययन तक कहीं भी हम दृष्टिपात करें तो स्त्री के प्रति हर कहीं दुराग्रह नजर आएगा। लोग कहते हैं कि हम बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। हर पल हर घड़ी हमारे आसपास कहीं भी कुछ न कुछ बदल रहा है। लेकिन एक चीज है जो कभी नहीं बदली और शायद ही बदलेगी वह है स्त्री को सिर्फ एक देह मात्र समझने की मानसिकता। सदियों से संघर्षरत नारी समाज की एक इकाई के रूप में अपनी पहचान की निर्मिती के लिए स्त्री, जिस जिजीविषा एवं प्रबल इच्छा शक्ति का परिचय आज दे रही है, वह उसकी बौद्धिक जागृति की ही परिचायक है जो उसने धर्म,आस्था, परंपरा,मूल्य एवं व्यवस्था के प्रति प्रकट किया है। वर्तमान समय में नारी पुरुष वर्ग से प्रतिस्पर्धा न करके केवल उसके समक्ष एक मनुष्य होने के नाते प्राप्त होने वाले अधिकारों की मांग कर रही है। वह पुरुष के अस्तित्व को नकार कर सहनागरिक की तरह अपनी पहचान स्थापित करना चाह रही है। इसके लिए उसका सारा जो और अब तक प्रयुक्त झूठ का स्वीकार और स्वतंत्र इंसान के रूप में अपनी स्वीकृति का है। महादेवी वर्मा के शब्दों में "संसार के मानव समुदाय में वही व्यक्ति स्थान और सम्मान पा सकता है वह जीवित कहा जा सकता है जिसके हृदय और मस्तिष्क ने समुचित विकास पाया हो और जो अपने व्यक्तित्व द्वारा मनुष्य समाज से राग आत्मक की अतिरिक्त बौद्धिक संबंधी स्थापित कर सकने में समर्थ हो एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की सबको आवश्यकता है कारण पीना इसके न मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति और संकल्प को अपना कह सकता है और ना अपने किसी कार्य को न्याय अन्याय की तुलना पर कॉल सकता है।"

कहीं के नहीं रहते
केश औरत और नाखून
अन्वय करते थे किसी श्लोक का ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थी
हम लड़किय अपनी जगह पर।

उपर्युक्त पंक्तियों में हम देख सकते हैं। कि किस तरह से कवि ने समाज में अपनी जगह की खोज और समाज द्वारा शुद्ध परिष्करण की प्रक्रिया इसी द्वंद्व में स्त्री का अंतर जगत से उसका संबंध भी परिभाषित होता है। अनामिका इस कविता के माध्यम से निरंतर पुरुष वर्ग की उपेक्षा सहकार समाज में अपनी स्थिति को परिभाषित करना चाहती है।

राम पाठशाला जा!
राधा खाना पका!
राम आ बताशा खा!
राधा झाड़ू लगा!
भैया अब सोएगा!
जाकर बिस्तर बिछा!

लड़कियां हवा धूप मिट्टी होती है।
उनका कोई घर नहीं होता।

यहां इस कविता की पंक्तियों में हम देख सकते हैं। कि किस तरह से विभिन्न स्थानों पर जाने अनजाने प्रदर्शित भी करती है।अनामिका प्रथमिक शालाओ में पढ़ाए जाने वाले और जनतांत्रिक पाठकों को केंद्र में रखकर समाज में हो रहे इस लिंगभेद के सत्य को उद्घाटित करती है।और सत्य यही है कि पित्रव्यवस्था में लड़कियों को इस प्रकार के विशेष सांचे में ढालने का तात्पर्य यही है कि वह बिना किसी विरोध के इन सांचों में सांचो में गलती–ढलती रहे और पुरुष को अपने उपर्युक्त स्त्री मिलती रहे और वह वह अपना प्रभुत्व कायम रख सके।

जिनका कोई घर नहीं होता।
उनकी होती है भला कौन सी जगह।
घर छोटे दर छोटे छूट गए लोग बाग
कुछ प्रश्न पीछे पड़े थे,वे भी छूटे।
छुटती गई जगहे।

अनामिका इस पंक्तियों के माध्यम से पुरुष सत्ता से लगातार प्रश्न करती है। जिसके इस पृथ्वी पर औरों से अलग देखा जाता रहा है। सदियों से बेटा बेटी में अंतर, लिंग भेद को मानने वाले पुरुषों पर स्त्रियों के माध्यम से प्रश्न का नंबर लगा देती है,हिंदी कविता में जिन रचनाकारों ने स्त्री को रचना सीता को एक कोटि, के तौर पर स्थापित किया अनामिका उन में अग्रणी है ऐसा नहीं है कि हिंदी में स्त्रियां कविताएं नहीं रखती थी अथवा इनकी कविताओं को जगह नहीं मिलती है इनकी रचनाओं में दिल की आवाज भी थी जो इनके समकालीन ओ से जुदा थी। कई दफे स्त्री रचनाकारों की रचनाओं में मुख्य स्वर स्त्री का ही मिलता हैं। इन तमाम किस्म के स्वरों का समूचे विषय सृजनात्मकता में दिखाई देता है।

हिंदी साहित्य के जिस दौरे में कवि अनामिका अपनी रचनात्मक ऊर्जा के साथ सामने आई उस समय तक स्त्री की रचना सिलता को एक कैटेगरी की तरह देखने का चलन नहीं था।

परंपरा से छूटकर बस यह लगता है–

जैसे तुकाराम का कोई
अधूरा अभंग।

Scanned with OKEN Scanner

कवियत्री अनामिका बेजगह कविता के अंतिम पंक्तियों के माध्यम से स्त्रियों के दुख दर्द को बयां करती है अपने को बहुत बड़े समाज का एक सुई की नोक के बराबर का अंग मानती है।समुद्र के बजाय अपने को छोटा तालाब मानती है। संघर्ष करने वाली स्त्री को अधूरा अभंग मानती है। साहित्य संसार में वह हस्ती विकसित नहीं हो पाई थी कि स्त्री की रचना तथा को अलग तरीके से देखा जाए यहां इशारा पुरातन पंथी के लोगों की तरफ नहीं किया जा रहा है अपितु तरक्की. पसंदगी का दावा करने वाले लोगों को इसके दायरे में रखा जा रहा है। अपनी वैचारिक समझ को प्रगतिशील समझने वाले लोग स्त्री को वर्ग के वक्त से बाहर नहीं देख पा रहे हैं। वर्ग की कैटेगरी से जोडने के बावजूद स्त्री की एक विभिन्न कोटि होनी चाहिए। हिंदी साहित्य के नाम वालो का ऐसा ख्याल नहीं बना था। इस दौर में सक्रिय स्त्रियों पर भी इसका असर दिखता है। वह भी खुद की रचनाओं को पृथक कर देखे जाने का हिमायत नहीं थी। हालांकि इनकी रचनाओं में वे चिन्ह मौजूद थे जो उन्हें रचनाकारों के समान वर्ग में रहने के बावजूद एक विभिन्न कोटि का बतलाते थे। कहना न होगा कि उन चिन्हों के मूल में उनकी रचनाओं में निहित विशिष्ट स्त्री तत्व था।

मनुवादियों ने स्त्री के शोषण करने वालों ने हजारों लाखों सालों तक स्त्री पर धर्म–स्वर्ग,नरक व पाप- पुण्य के नाम पर हर तरह के जुल्मों की इंतहा की है क्योंकि स्त्री भावनाओं से निर्मित होती है। वह विचारों से भावनाओं को ज्यादा महत्व देती है। वह प्रेम करती है। ममता व करुणा उनके गुण है। इसीलिए उसे पुरुष प्रधान समाज छलता रहा है। सारे काल्पनिक देव शास्त्र स्वर्ग नरक पुरुषों ने तीनों के शोषण हेतु निर्मित किया है। वास्तव में समाज का ही क्यों संपूर्ण मानवता का ह्रदय होती है महिलाएं।

निष्कर्ष: यह कह सकते हैं कि अनगिनत महिलाओं की है गरीबी और अशिक्षा ने महिलाओं को खरीद–फरोख्त के सम्मान में बदल दिया है ना जाने कितनी हमारी बहन बेटियां ऐसे बे वह तर्पों में सड रही है आप स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करने के बाद भी शायद महिलाओं के हालात नहीं बदलेंगे। अनामिका ऐसी ही उपेक्षित शोषित दलित महिलाओं के लिए इस मानव विश्व में स्थान ढूंढ रही है वह कहती कि घर में भोजन से लेकर बिछोना बिछड़ने तक भाई या बेटा मालिक की तरह होता है। और उसी की स्त्री बहन को उसकी दासी की तरह काम करना पड़ता है। जो लोग स्वयं को नारी के उद्धारक मानते हैं। वह भी जब प्रॉपर्टी का वारिस बनाना है। तो बेटी नहीं बेटे को चुनते हैं। यही हमारे समाज का सच है स्त्री को लेकर हम सिर्फ कहानी उपन्यास या कविताओं से तो बदलाव नहीं आएगा बदलाव के लिए एक और आजादी की लड़ाई और शायद सतत संघर्ष की जरूरत है । क्योंकि कई बार समाज में बदलाव की आहट सुनाई देती है। मगर उसे दबाने में एक मनुवादी लोग सफल हो जाते हैं। यह प्रश्न अत्यंत महत्त्व महत्वपूर्ण है कि चाहे वह घर हो, समाज हो, या वर्किंग प्लेस हो, संसद, विधानमंडल या लोकल बॉडीज, लोकल संस्था, या फिर मार्केट इन सब जगहों पर औरत का क्या स्थान क्या जगह है। इन सब जगह पर पुरुषों का कब्जा है। औरतों को जो जगह मिलती है। वह पुरुषों की इजाजत से ऐसे में क्षमता या न्याय कैसे मिल सकता है।

सहायक पुस्तक सूची

1. अनामिका,बेजगह,खुरदरी हथेलियां।
2. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता।
3. क्षमा शर्मा, स्त्रीत्ववादी विमर्श–समाजऔर साहित्य।
4. हरदयाल, स्त्री का काव्य–जगत– समीक्षा।

Scanned with OKEN Scanner